कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सामाजिक परिणाम और चुनौतियां

डॉ. भूपेश, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, श्री बलदेव राम मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर (राजस्थान)

सारांश

"विधय रेड्डी एक कॉलेज के स्टूडेंट हैं। उन्होंने अपने कॉलेज के होमवर्क के लिए गूगल के नए AI चौटबोट जेमिनी का इस्तेमाल किया। अपने होमवर्क संबंधित सवाल पर जेमिनी ने जो जवाब दिया वो रेड्डी के लिए वाकई डराने वाला था। रेड्डी ने बताया कि जेमिनी ने जवाब देते हुए कहा कि यह तुम्हारे लिए है, सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे लिए है। तुम कोई विशेष इंसान नहीं हो और तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है। जेमिनी ने आगे लिखा कि तुम समय और संसाधन दोनों की बर्बादी हो,तुम इस धरती के लिए बोझ हो। इसके बाद जो जवाब जेमिनी ने लिखा,वह 29 साल के छात्र के लिए भी चौंकाने वाला था। गूगल के AI चौटबोट ने आगे लिखा कि तुम नाली के समान हो, तुम ब्रह्मांड पर एक धब्बा हो और तुम मर जाओ।" 16 नवंबर, 2024 को नवभारत टाइम्स में प्रकाशित यह खबर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की समझ पर एक बड़े सवालिया निशान के रूप में पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करती है। क्या वाकई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी मानव मस्तिष्क का स्थान ले सकती है? क्या यह मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन को कोई कल्याणकारी आयाम प्रदान कर सकती है? अथवा ए आई का बढ़ता दायरा मनुष्य के विवेक और चिंतन की धार को कुंद कर उसे विज्ञान, तकनीक और प्रौद्योगिकी का गुलाम बना देगा? समाचार पत्रों में बहुधा प्रकाशित होने वाली और अद्यतन जीवन में अनुभूत की जाने वाली अनेकानेक घटनाएं ए आई के रूप में समाज के समक्ष उपस्थित होने वाली चुनौतियों और परिणामों की तरफ संकेत करती हुई भविष्य की धुंधली लेकिन कुछदृकुछ डरावनी तस्वीर प्रस्तुत करती है। इसी तस्वीर में आशा की एक किरण भी छुपी हुई है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता कभी भी मानवीय समझ, विवेक और भावनाओं का स्थान नहीं ले सकती। इंसानियत को बचाने के लिए इंसान की अहमियत हमेशा बनी रहेगी। तकनीक और मशीन से जीवन का एक पहलू मात्र ही हो सकती है, लेकिन संपूर्णता के लिए मानव का होना जरूरी है। एक संवेदनशील, प्रज्ञावान मानव का... जो मशीन का स्वामी तो हो सकता है, लेकिन दास नहीं।